

दि कर्मिक पोस्ट

Global
School Of
Excellence,
Obedulaganj

वर्ष : 9, अंक : 15

(प्रति बुधवार), इन्दौर, 29 नवंबर 2023 से 5 दिसंबर 2023

पेज : 8

कीमत : 3 रुपये

बढ़ते तापमान के कारण बढ़ रही हैं भीषण बारिश की घटनाएं- रिपोर्ट

लंदन। एक नए अध्ययन के अनुसार, अत्याधुनिक जलवायु मॉडल इस बात का सही से पता नहीं लगा सकते हैं कि, बढ़ते तापमान के कारण चरम बारिश की घटनाएं कितनी बढ़ सकती हैं। जिसके कारण भविष्य में और अधिक विनाशकारी बाढ़ की घटनाएं बढ़ सकती हैं। अध्ययन में कहा गया है कि, इस तरह की घटनाएं तब तक जारी रहेंगी जब तक कि लोग ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन पर अंकुश नहीं लगाते। इस सप्ताह के अंत में दुबई में शुरू होने वाले कॉप 28 शिखर सम्मेलन में की तैयारी की जा रही है। यह पहला ग्लोबल स्टॉकटेक (जीएसटी) पेरिस समझौते को अपनाने के बाद से हुई प्रगति का व्यापक मूल्यांकन प्रदान करेगा। इससे जलवायु कार्रवाई पर प्रयासों को संरचित करने में मदद मिलेगी, जिसमें प्रगति में कमी को दूर करने के लिए आवश्यक उपाय भी शामिल होंगे। इस डर के बीच कि लंबे समय तक तापमान को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करना जल्द ही असंभव



हो सकता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि मानवजनित जलवायु परिवर्तन के सबसे बुरे प्रभावों को रोकने के लिए यह आवश्यक है। पॉट्सडैम इंस्टीट्यूट ऑफ क्लाइमेट इम्पैक्ट रिसर्च (पीआईके) के शोधकर्ताओं ने अपने वैश्विक आकलन में संयुक्त राष्ट्र निकाय द्वारा उपयोग किए जाने वाले 21 अगली पीढ़ी जलवायु मॉडल में भूमि पर दैनिक वर्षा की तीव्रता और आवृत्ति का पता लगाया है। फिर उन्होंने

मॉडलों द्वारा अनुमानित बदलावों की तुलना ऐतिहासिक रूप से देखे गए परिवर्तनों से की, जिससे पता चला कि लगभग सभी जलवायु मॉडलों ने वैश्विक तापमान वृद्धि के साथ बारिश की चरम सीमा में वृद्धि की दर को काफी कम करके आंका है। जर्नल ऑफ क्लाइमेट में प्रकाशित शोध के मुख्य शोधकर्ता मैक्स कोट्ज ने कहा,

यह अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि भारी बारिश की तीव्रता और आवृत्ति ग्लोबल वार्मिंग में हर डिग्री के वृद्धि के साथ तेजी से बढ़ रही है। परिवर्तन भौतिकी में क्लॉसियस-क्लैपेरोन संबंध के साथ ट्रेक करते हैं, जिसने स्थापित किया कि गर्म हवा में अधिक जल वाष्प होता है। शोधकर्ताओं के अनुसार, यह खोज इस तथ्य को उजागर करती

है कि, चरम बारिश की घटनाओं में वैश्विक परिवर्तन में हवा नहीं बल्कि तापमान हावी होता है। यहां बताते चलें कि, क्लॉसियस-क्लैपेरोन संबंध, एक ही पदार्थ के दो चरणों के बीच तापमान की निर्भरता से संबंधित है, इसमें सबसे महत्वपूर्ण वह है जो वाष्प दबाव को उजागर करता है। अध्ययन के अनुसार, दक्षिण पूर्व एशिया या उत्तरी कनाडा जैसे उष्णकटिबंधीय और उच्च अक्षांशों में चरम बारिश की तीव्रता और आवृत्ति में भारी वृद्धि पाई गई। सह-शोधकर्ता एंडर्स लीवरमैन ने कहा, चरम बारिश की घटनाएं और अधिक बार होंगी। समाज को इसके लिए तैयार रहने की जरूरत है। अच्छी खबर यह है कि इससे अत्यधिक वर्षा के भविष्य की भविष्यवाणी करना आसान हो जाता है। बुरी खबर यह है अगर हम ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन करके वैश्विक तापमान को बढ़ाते रहे तो यह और भी बदतर हो जाएगा।

जानलेवा वायु प्रदूषण- यूरोप में सालाना 2.53 लाख मौतों की वजह बना पीएम 2.5

मुंबई भारत ही नहीं बढ़ते वायु प्रदूषण से यूरोप भी त्रस्त है, जो हर साल वहां लाखों जिंदगियों को लील रहा है। यूरोपियन एनवायरनमेंट एजेंसी (ईईए) ने 24 नवंबर 2023 को प्रकाशित अपनी रिपोर्ट में जानकारी दी है कि यूरोप में 2021 के दौरान वायु प्रदूषण का स्तर विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा तय मानकों से कहीं ज्यादा दर्ज किया गया।

आंकड़ों के अनुसार इस दौरान प्रदूषण के महीन कणों (पीएम2.5) के संपर्क में आने से यूरोप में 253,000 लोगों की मौत हो गई थी। वहीं नाइट्रोजन डाइऑक्साइड (एनओ2) ने भी 52,000 जिंदगियों को लील लिया था। यदि 2020 से तुलना करें तो इस आंकड़े में मामूली वृद्धि दर्ज की गई है। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने जहां नाइट्रोजन डाइऑक्साइड (एनओ2) के लिए 10 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर के स्तर को सुरक्षित माना है। ऐसे में रिपोर्ट के मुताबिक यदि डब्ल्यूएचओ द्वारा तय मानकों का पालन किया जाता तो यूरोप में इन जिंदगियों को बचाया जा सकता था। इतना ही नहीं मानकों का पालन करने से ओजोन (ओ3) के संपर्क में आने से होने वाली 22,000 मौतों को भी टाला जा सकता था। रिपोर्ट के अनुसार यूरोप में ओजोन प्रदूषण के लिए परिवहन और औद्योगिक गतिविधियां जैसे कारक जिम्मेवार थे।

प्रदूषण के साथ शहर की आबोहवा हो रही दूषित, सबसे ज्यादा धुएं का असर

धार. शहर की सड़कों पर दौड़ लगाते हुए वाहन हर दम धुआं छोड़ रहे हैं। इस धुएं के कारण हवा में प्रदूषण का जहर फैल रहा है। जिससे लोगों का सांस लेना दूभर हो रहा है। बड़े शहरों की तरह धार में भी प्रदूषण का खतरा बढ़ने लगा है। पिछले दिनों शहर में एक्यूआई प्रतिशत 126 तक पहुंच गया था। विशेषज्ञों का कहना है कि सामान्य स्थिति में हवा में एक्यूआई 100 होना चाहिए। जबकि इससे ऊपर एक्यूआई प्रतिशत बढ़ाना खतरे से कम नहीं है।

दीपावली पर पटाखे छोड़ने से प्रदूषण का स्तर बढ़ गया था। इसके अलावा शहरी क्षेत्र में कचरा जलाने और खेतों में पराली जलाने से भी धुआं होता है, जो हवा को दूषित करता है। उधर, लगातार बढ़ते प्रदूषण से आंखों में जलन सहित अस्थमा और एलर्जी के मरीज जिला अस्पताल पहुंच रहे हैं। डॉक्टरों का कहना है कि सामान्य दिनों में सर्दी-खांसी होना आम बात है। लेकिन हर वर्ग के लोग इससे पीड़ित हैं, जो कही ने कही इशारा करते हैं कि

शहर की आबोहवा लगातार बिगड़ रही है, जो चिंता का विषय है। पेट्रोल की तुलना में डीजल वाहन अधिक धुआं छोड़ते हैं। शहर में कई ऑटो चालकों द्वारा डीजल की जगह केरोसीन का उपयोग किया जा रहा है। इससे भी वाहन चलने पर धुआं अधिक मात्रा में होता है। जिला प्रदूषण नियंत्रण अधिकारी राजेश गांधे के अनुसार वाहनों से निकलने वाला यह धुआं हवा के कणों के साथ हमारी श्वास नली में पहुंचकर फेफड़ों को नुकसान पहुंचाता है। वाहनों से निकलने वाला धुआं हवा को दूषित करता है। यह हम सभी के लिए खतरनाक है। ऐसे में सभी की जिम्मेदारी है कि वह प्रदूषण को फैलने से रोके। वाहनों की समय-समय पर जांच होना चाहिए। विभिन्न प्रकार के धुआं में कार्बन मोनोऑक्साइड, कार्बन डाइऑक्साइड और पार्टिकुलेट मैटर होते हैं। इसके अतिरिक्त एल्डिहाइड, एसिड गैसों, सल्फरडाई ऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, पॉलीसाइक्लिक एरोमैटिक हाइड्रोकार्बन आदि तत्व होते हैं, जो मानव स्वास्थ्य के लिए घातक होते हैं।

उज्जैन को बनाएं वैश्विक धार्मिक पर्यटन केंद्र

उज्जैन. मालवा माटी गहन गंभीर, पग-पग रोटी, डग-डग नीर की पहचान अब धुंधली हो रही है। मालवा के उज्जैन संभाग के सात जिलों के करीब 90 लाख बाशिंदों में से लाखों मतदाताओं ने मताधिकार का प्रयोग किया। संभाग की 29 सीट यानी विधानसभा में 12 प्रतिशत हिस्सेदारी सरकार में बड़ा कारक रहती है। इससे सरकार में पार्टी बदले ना बदले, लेकिन सरकार की सूरत में बदलाव अवश्यसंभावी है। पौराणिक काल से लेकर मौर्य, गुप्त काल के प्रमुख व्यापारिक मार्ग की तासीर बदल रही है। इस बदलते दौर में लोगों की जरूरत भी बदलने लगी है। इसी कारण सरकार से अपेक्षाओं का बदलना भी लाजमी है। बदलाव की यह कहानी न सिर्फ उज्जैन की है, बल्कि देवास, शाजापुर, आगर, रतलाम, मंदसौर और नीमच तक रोटी और नीर की जद्दोजहद बढ़ रही है।

रेलवे मंडल और खान-पान के लिए प्रसिद्ध रतलाम को स्थानीय रोजगार साधनों की दरकार है। रोजगार फूड प्रोसेसिंग के साथ विभिन्न औद्योगिक क्लस्टर के माध्यम से उद्योगों को लाना होगा। सरकारों का ध्यान नहीं होने से कई उद्योग बंद हो चुके हैं, जिन्हें पुनर्जीवित करना होगा। सोना औरसेव की पहचान को विस्तार देने की जरूरत है। इंदौर और उज्जैन के बीच स्थित औद्योगिक नगरी देवास मां चामुंडा की टेकरी के कारण भक्तों के लिए आकर्षण का केंद्र रहती है। एबी रोड के गुजरने से औद्योगिक और व्यावसायिक लोगों की भी पहली पसंद है, लेकिन उच्च शिक्षा, स्वास्थ्य और

रोजगार के लिए इंदौर और अन्य शहरों पर निर्भरता कम नहीं हो रही। औद्योगिक नगरी में नए उद्योगों के लिए जमीन नहीं बची है। इससे विकास की रफ्तार मंद हो रही है। नए उद्योग आने के साथ स्थानीय लोगों को रोजगार में प्राथमिकता मिल सके। तीनों विधानसभा क्षेत्रों में पानी सबसे बड़ा मसला है। दो लाख किसानों तक यदि नर्मदा का पानी पहुंचेगा तो कृषि अर्थव्यवस्था विकास की नई इबारत लिख सकती है। 3500 करोड़ की परियोजना से जनता को आस है। लुप्त हो रही चंद्रलेखा नदी को पुनर्जीवित करने को मदद चाहिए। पार्वती-नर्मदा लिंक और शुजालपुर में डैम की जरूरत है। आगर, मंदसौर और नीमच जिले के युवा राजस्थान, मप्र के बड़े शहरों पर निर्भर हैं। यहां फूड प्रोसेसिंग यूनिट्स की जरूरत है। मंदसौर-नीमच में अफीम और लहसुन के लिए तो आगर-सुसनेर में संतरा के लिए फूड प्रोसेसिंग उद्योग की दरकार है। आगर में उज्जैन झालावाड़ हाईवे को घोंसला से सोयत तक फोरलेन करना होगा। श्री महाकाल ज्योतिर्लिंग और महालोक में बढ़ी पर्यटकों की संख्या ने निश्चित ही उज्जैन की अर्थव्यवस्था और रोजगार में बढ़ोतरी की है, लेकिन अब पर्यटकों को बनाए रखने की चुनौती सामने आने लगी है। सिंहस्थ से पहले वैश्विक धार्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में उज्जैन को स्थापित करना बड़ी जरूरत है। संभागीय मुख्यालय के अनुरूप स्वास्थ्य सेवाएं, शैक्षणिक संस्थाओं के साथ मेडिकल इन्फ्रामेंट पार्क व क्लस्टर के रूप में उद्योग-धंधों को गति देना जरूरी है। मोक्षदायिनी शिप्रा को स्नान और आचमन योग्य बनाना होगा। नागदा, खाचरौद, आलोट के जिला बनाने की मांग पर ध्यान देगा होगा।

असम में कीटों के हमले से 28 हजार हेक्टेयर में धान की फसल चौपट, गर्मी से और बढ़ेगा खतरा

असम। लंबे समय तक गर्म तापमान रहने के कारण असम में फसलों पर कीटों का गंभीर हमला हो सकता है। इन कीटों की वजह से वहां कम से कम 15 जिलों में करीब 28,000 हेक्टेयर धान की फसल को नुकसान पहुंचा है। यह फसलें पकने के करीब और कटाई के लिए तैयार थी, तभी कीटों ने इन पर हमला कर दिया। इस कीट को ईयर हेड कटिंग कैटरपिलर या धान की बाली काटने वाली इल्ली या आर्मीवर्म (माइथिम्ना सेपरेटा) के नाम से भी जाना जाता है। यह कीट पत्तियों को खाता है और फसलों में पौधों के आधार से बालियों को काट कर अलग कर देता है। इसकी वजह से अक्सर खेत ऐसा दिखता है मानों उसे मवेशियों ने चर लिया हो। इसके प्रकोप के दौरान, कीट बड़ी तादाद में बढ़ जाते हैं और फसलों को खाने और हमला करने के लिए एक सेना की तरह एक खेत से दूसरे खेत में झुंड बनाकर घूमते हैं।

विशेषज्ञों ने डाउन टू अर्थ को बताया कि हालांकि राज्य में इस कीट की मौजूदगी की रिपोर्ट कई वर्षों से मिल रही थी, लेकिन यह पहला मौका है जब इतने बड़े पैमाने पर इन कीटों का हमला हुआ है। उनका कहना है कि, यह आंशिक रूप से लंबे समय तक लगातार गर्म तापमान के रहने की वजह से हुआ है। इस बारे में असम कृषि विश्वविद्यालय के पौध संरक्षण विभाग के मृदुल डेका का कहना है कि, बढ़ते तापमान के साथ शुष्क परिस्थितियां कीटों की आबादी में वृद्धि के लिए अनुकूल माहौल तैयार कर रही हैं। क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केंद्र द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक, 22 नवंबर 2023 तक राज्य के कम से कम सात जिलों में अधिकतम और न्यूनतम तापमान सामान्य से अधिक दर्ज किया गया। वहीं गुवाहाटी में, अधिकतम तापमान 31.4 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया, जो वर्ष के इस समय के लिए सामान्य से साढ़े चार डिग्री सेल्सियस अधिक है। गौरतलब है कि गर्म होती दुनिया में, तापमान और बारिश में आता बदलाव दो ऐसे कारक हैं जो कीटों और बीमारियों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह इन पर निर्भर है कि यह बीमारियां और कीट कैसे और कहां फैलते हैं। क्लाइमेट चेंज एंड सस्टेनेबल एग्रीकल्चर नामक पुस्तक में प्रकाशित 2017 के एक में कहा गया है कि वैश्विक तापमान में मामूली सी भी वृद्धि कीटों के जीवनचक्र को छोटा कर सकती है। इसकी वजह से न केवल कीटों की आबादी में बल्कि साथ ही इनकी पीढ़ियों में भी वृद्धि होगी। इसके साथ ही इनकी भौगोलिक सीमा, पनपने का मौसम बढ़ जाएगा, जिससे कीटों के आक्रमण का खतरा भी बढ़ जाएगा। साथ ही प्रवासी कीटों के आक्रमण की आशंका भी बढ़ जाएगी।

वायुमंडल में कितनी दूर तक यात्रा कर सकता है माइक्रोप्लास्टिक, यह उसका आकार करता है तय

नई दिल्ली। रिसर्च से पता चला है कि प्लास्टिक के महीन कण वायुमंडल में कितनी दूर तक यात्रा कर सकते हैं, यह उनके आकार पर निर्भर करता है। प्लास्टिक के इन महीन कणों को जेट स्ट्रीम के जरिए महासागरों और महाद्वीपों के पार तक ले जाया जा सकता है। गौरतलब है कि माइक्रोप्लास्टिक का यह बढ़ता जहर आज पूरी दुनिया में फैल चुका है। प्लास्टिक के अत्यंत महीन कणों को जिनका आकार पांच मिलीमीटर या उससे कम होता है, माइक्रोप्लास्टिक कहा जाता है।

बता दें कि रोजमर्रा की चीजों, पैकेजिंग और सोडा बोतलों जैसे सामान में इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक के यह बेहद महीन कण हवाओं के जरिए पूरी दुनिया की यात्रा कर सकते हैं। ऐसे में माइक्रोप्लास्टिक वातावरण में किस तरह यात्रा करता है, इसे समझने के लिए शोधकर्ताओं ने हाल ही में एक मॉडल तैयार किया है। विश्लेषण से पता चला है कि पिछले अध्ययनों में जो कयास लगाए गए थे उनके विपरीत गोल की जगह सपाट सतह वाले फाइबर कहीं ज्यादा संख्या में मौजूद हैं और वो निचले वायुमंडल में कहीं ज्यादा लंबी दूरी तय कर सकते हैं। यह जानकारी कॉर्नेल विश्वविद्यालय और यूटा स्टेट यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं द्वारा किए अध्ययन में सामने आई है। इस अध्ययन के नतीजे जर्नल नेचर जियोसाइंस में प्रकाशित हुए हैं। इसमें कोई शक नहीं कि माइक्रोप्लास्टिक आज पूरी दुनिया के लिए एक बड़ी समस्या बन चुका है। हमारे ग्रह पर शायद ही कोई ऐसी जगह होगी, जो इस बढ़ते खतरे की चपेट में न आई हो। यह कण जमीन और



महासागरों से लेकर वायुमंडल पर भी काबिज हो चुके हैं। कुछ समय पहले जापानी वैज्ञानिकों को बादलों में भी माइक्रोप्लास्टिक्स की मौजूदगी के सबूत मिले थे। जो स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिहाज से बेहद हानिकारक साबित हो सकते हैं। यहां तक की आज माइक्रोप्लास्टिक इंसानी शरीर में भी घुसपैठ कर चुका है। गौरतलब है कि हाल ही में वैज्ञानिकों ने इस बात की पुष्टि की है कि एक हफ्ते में इंसान उतना माइक्रोप्लास्टिक निगल लेता है, जिससे एक क्रेडिट कार्ड बनाया जा सकता है। बता दें कि माइक्रोप्लास्टिक के यह कण रक्त और इंसानी फेफड़ों के साथ-साथ नसों में भी मिले हैं। यहां तक कि अजन्में बच्चे की गर्भनाल में भी इसकी मौजूदगी की पुष्टि हो चुकी है। इतना ही नहीं रिसर्च से इस बात की भी पुष्टि हुई है कि प्लास्टिक के यह टुकड़े कोशिकाओं की कार्यप्रणाली को खराब कर सकते हैं। एक अन्य अध्ययन से यह भी पता चला है कि हमारे हवा, पानी और भोजन में मौजूद प्लास्टिक के महीन कण बैक्टीरिया में एंटीबायोटिक रेसिस्टेंस के खतरे

को 30 गुणा तक बढ़ा सकते हैं।

क्या कुछ निकलकर आया अध्ययन में सामने- शोधकर्ताओं के मुताबिक वायुमंडल में पहुंचता यह माइक्रोप्लास्टिक कई स्रोतों से पैदा हो रहा है। इनमें कटे-फटे टायर से लेकर सड़क की धूल और समुद्र में तैरती सोडा बोतलें तक शामिल हैं। प्लास्टिक के यह टुकड़े छोटे-छोटे महीन कणों में टूटकर माइक्रोप्लास्टिक में बदल जाते हैं। यह इतने छोटे हो सकते हैं कि इन्हें हवा द्वारा ले जाया जा सकता है। शोध के मुताबिक पिछले अध्ययनों में माइक्रोप्लास्टिक के इन सपाट सतह के फाइबरों को गोलाकार या बेलनाकार समझने की जो भूल की थी, उसकी वजह से इनके जमाव की दर का वास्तविकता से अधिक अनुमान लगाया गया था। इन फाइबरों के सपाट आकार को देखते हुए रिसर्च में पुष्टि की गई है कि यह पहले की गणना की तुलना में वायुमंडल में 450

फीसदी अधिक समय बिताते हैं, जिसकी वजह से यह कण वायुमंडल में कहीं ज्यादा लंबी दूरी तक यात्रा कर सकते हैं। एक अन्य अध्ययन के मुताबिक वातावरण में प्रवेश करने के बाद माइक्रोप्लास्टिक के यह कण करीब छह दिनों तक हवा में रह सकते हैं। इतने समय में यह कई महाद्वीपों की यात्रा कर सकते हैं या फिर सांस के जरिए हमारे शरीर के अंदरूनी अंगों में जा सकते हैं। इतना ही नहीं अध्ययन के दौरान शोधकर्ताओं को माइक्रोप्लास्टिक के जो ज्यादातर कण मिले हैं वो आकार में सपाट थे। कॉर्नेल विश्वविद्यालय और अध्ययन अनुमानों की तुलना में वायुमंडल में पहुंचने वाले माइक्रोप्लास्टिक में समुद्र की बड़ी भूमिका हो सकती है। उनका आगे कहना है कि, अब हम सटीक रूप से उन माइक्रोप्लास्टिक के स्रोतों का पता लगा सकते हैं, जो अंततः हवा में ले जाए जाएंगे। उनके अनुसार यदि हम जानते हैं कि कण कहां से आ रहे हैं तो हम इस प्लास्टिक कचरे को कम करने और उनके प्रबंधन के

लिए बेहतर रणनीतियां, योजनाएं और नियम बना सकते हैं। उनके मुताबिक यह निष्कर्ष निचले वायुमंडल में परिवहन किए गए अन्य भारी कणों, जैसे धूल और पराग को भी नियंत्रित करने में मददगार हो सकते हैं। प्लास्टिक जिसे कभी वरदान से कम नहीं समझा जाता था वो कितनी बड़ी समस्या बन जाएगा यह किसी ने भी नहीं सोचा होगा। 1907 में पहली बार सिंथेटिक प्लास्टिक %बेके लाइट% का उत्पादन शुरू किया गया था लेकिन उसके उत्पादन में तेजी 1950 के बाद से आई। अनुमान है कि तब से अब तक हम इंसान 830 करोड़ टन प्लास्टिक का उत्पादन कर चुके हैं, जिसके 2025 तक दोगुणा हो जाने का अनुमान है। समय के साथ यह समस्या कितना विकराल रूप ले लेगी, इसका अंदाजा आप खुद लगा सकते हैं। ऐसे में इससे निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई की दरकार है।

जलवायु परिवर्तन को लेकर तेज करने होंगे प्रयास

दुबई ।

संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ़ेमवर्क सम्मेलन के निकाय कॉन्फ़ेंस ऑफ़ पार्टिज की दुबई में प्रस्तावित 28वीं बैठक से पहले संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम ने उत्सर्जन अंतर रिपोर्ट जारी की है। दुबई में आयोजित होने वाले इस सम्मेलन का इसलिए भी विशेष महत्त्व है कि यह विभिन्न देशों के लिए यह आकलन करने का अवसर है कि पेरिस समझौता, 2015 के अंतर्गत तय लक्ष्यों की पूर्ति की दिशा में दुनिया ने कितनी प्रगति की है। परंतु, यह आकलन स्वयं अपने आप में दुनिया के बीच आपसी सहमति से तैयार दस्तावेज प्रतिबिंब ही होगा। इस सम्मेलन में, विशेषकर, उन लक्ष्यों की वर्तमान उपयोगिता पर संभवतः चर्चा नहीं हो पाएगी।



संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ़ेमवर्क सम्मेलन के निकाय कॉन्फ़ेंस ऑफ़ पार्टिज की दुबई में प्रस्तावित 28वीं बैठक से पहले संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम ने उत्सर्जन अंतर रिपोर्ट जारी की है। दुबई में आयोजित होने वाले इस सम्मेलन का इसलिए भी विशेष महत्त्व है कि यह विभिन्न देशों के लिए यह आकलन करने का अवसर है कि पेरिस समझौता, 2015 के अंतर्गत तय लक्ष्यों की पूर्ति की दिशा में दुनिया ने कितनी प्रगति की है। परंतु, यह आकलन स्वयं अपने आप में दुनिया के बीच आपसी सहमति से तैयार दस्तावेज प्रतिबिंब ही होगा। इस सम्मेलन में, विशेषकर, उन लक्ष्यों की वर्तमान उपयोगिता पर संभवतः चर्चा नहीं हो पाएगी। उत्सर्जन अंतर रिपोर्ट में इस महत्त्वपूर्ण बिंदु पर ध्यान आकृष्ट किया गया है कि दुनिया में ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) का उत्सर्जन अब भी वैश्विक तापमान में वृद्धि 2 डिग्री से नीचे रखने के लिए जरूरी मात्रा से कहीं अधिक हो रहा है। रिपोर्ट में विशेष रूप से इस बात की चर्चा की गई है कि 'वैश्विक तापमान में वृद्धि 2 डिग्री और 1.5 डिग्री से कम रखने के लक्ष्य तक कम से कम खर्च में पहुंचने के लिए वैश्विक स्तर पर जीएचजी के उत्सर्जन में क्रमशः 28 प्रतिशत और 42 प्रतिशत की कमी आवश्यक है।' पेरिस समझौते में यह सहमति बनी थी कि दुनिया का प्रत्येक देश- राष्ट्र निर्धारित योगदान (एनडीसी) को उत्सर्जन में कमी के वैश्विक प्रयासों के अनुरूप आगे बढ़ाएगा। परंतु, इन बातों का निर्णय देशों पर छोड़ दिया गया है और इस दृष्टिकोण से पेरिस समझौता मात्र एक समझौता ही है, न कि संधि। अधिकांश मामलों में एनडीसी इस बात को उचित महत्त्व नहीं दे पाता है कि कौन से लक्ष्य हासिल हो सकते हैं और कौन आवश्यक हैं। दुनिया के देशों द्वारा हालात के आकलन में इन एनडीसी के अगले चरण के बारे में सूचित किया जाएगा। अनुमान है कि दुनिया के देश 2025 तक एनडीसी सौंप देंगे।

यह मालूम होने के बाद कि उत्सर्जन कम करने में दुनिया के देशों ने कितनी प्रगति की है और कौन से उपाय और किए जाने की आवश्यकता है, आशा की जा रही है कि और अधिक महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय किए जाएंगे। हालांकि, उत्सर्जन अंतर रिपोर्ट हालात की समीक्षा की तुलना में आंखें खोलने वाली हो सकती है। रिपोर्ट में स्पष्ट कर दिया गया है कि एनडीसी को अगर अद्यतन नहीं किया गया तो यह सर्वाधिक संभावित परिस्थितियों में 2035 तक वास्तविक एवं इच्छित उत्सर्जन में अंतर बढ़ा देगा। इस अंतर को पाटना गणितीय रूप में मुश्किल होगा। इस तरह, वर्तमान और 2030 के बीच की अवधि अति महत्त्वपूर्ण है। अगर वर्तमान एनडीसी में सुधार होते हैं तभी दुनिया के देश उन स्तरों तक तापमान में वृद्धि नियंत्रित कर पाएंगे जिनके ऊपर विनाश की शुरुआत हो जाएगी। लिहाजा, इस कॉप का सबसे महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष यह होगा कि दुनिया के देशों को निकट अवधि में अधिक महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय करने के महत्त्व को समझना होगा। इसके अलावा वायुमंडल में पहले से मौजूद जीएचजी से होने वाले नुकसान की भरपाई के लिए वित्त के ढांचे सहित अन्य विषयों पर भी कॉप में चर्चा हो सकती है। परंतु, अंततः दुनिया के देशों के लिए कॉप आयोजित करने का लक्ष्य इस बात पर सहमति बनाना है कि जलवायु परिवर्तन के खतरे को कैसे टाला जा सकता है। इसके लिए देशों को उत्सर्जन नियंत्रित करने के लिए पूरी निष्ठा के साथ अधिक प्रयास करने होंगे। भारत में प्रति व्यक्ति उत्सर्जन वैश्विक औसत का आधा है जबकि, रूस और अमेरिका में यह आंकड़ा वैश्विक औसत का दोगुना है। दूसरी तरफ, यूरोपीय संघ इस दृष्टिकोण से वैश्विक औसत से नीचे है। परंतु, यह निश्चित है कि भविष्य में भारत से हानिकारक गैसों का उत्सर्जन बढ़ेगा। ये उत्सर्जन वैश्विक तापमान में वृद्धि का भविष्य तय करेंगे। भारत को अपनी अर्थव्यवस्था का आकार बढ़ने के साथ ही कार्बन उत्सर्जन की तीव्रता कम करनी होगी। साथ-साथ उसे टिकाऊ एवं अक्षय ऊर्जा समाधानों की तरफ तेजी से कदम बढ़ाना होगा।

विश्व जलवायु परिवर्तन शिखर सम्मेलन में भाग लेने दुबई जाएंगे महापौर

इंदौर दुबई में आयोजित विश्व जलवायु परिवर्तन शिखर सम्मेलन सीओपी-28 (कॉप28) में भाग लेने महापौर पुष्यमित्र भार्गव 30 नवंबर को दुबई पहुंचेंगे। इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस सहित कई राष्ट्र प्रमुख और वैश्विक नेता भाग लेंगे। क्लीन एयर कैटलिस्ट के साथ वायु गुणवत्ता में सुधार सहित लोकल क्लाइमेट एक्शन में इंदौर के योगदान पर प्रजेंटेशन के लिए महापौर को आमंत्रित किया गया है। महापौर लोकल क्लाइमेट एक्शन समिट में बेस्ट स्मार्ट सिटी इंदौर की वायु गुणवत्ता सुधार आदि पर अनुभव साझा करेंगे।

